RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-05
May-2019

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[UGC Listed Journal]

'गोदान' की चरित्र योजना

दया शंकर कुमार

यू.जी.सी.–नेट / जे.आर.एफ.–2014

प्रेमचंद हिन्दी उपन्यास के आरंभिक दौर के लेखक हैं जहाँ उपन्यास परंपरा अपरिपक्व अवस्था में थी। कुछ लेखक उपदेशात्मक उपन्यास लिख रहे थे, कुछ जासूसी तो कुछ तिलस्मी–ऐयारी। ये सभी उपन्यास चरित्रों की दृष्टि से कमजोर थे। उपदेशात्मक उपन्यासों में चरित्र किसी आदर्श को व्यक्त करने वाला प्रतीक मात्र होता था, उसका स्वतंत्र व्यक्वि नहीं बचता था। तिलस्मी–ऐयारी उपन्यासों में जादुई व काल्पनिक किस्म की खतरनाक स्थितियाँ और घटनाएँ होती थीं जिससे नायक को जूझना होता था। ऐसे कथानक में नायक को अतिप्राकृतिक बना कर ही प्रस्तुत किया जा सकता था। इसी प्रकार, जासूसी उपन्यासों के नायक असाधरण चालाकी से भरे होते थे। इसी समय मनोवैज्ञानिक उपन्यासों की परम्परा भी शुरू होने लगी थी। इन उपन्यासों में चरित्र महत्वपूर्ण होते थे किन्तु पूरी रचना चरित्र की वैयक्तिकता और आंतरिकता पर ही केन्द्रित हो जाती थी, समाज छूट जाता था। प्रेमचंद ने इन सभी दृष्टियों को नकारते हुए चरित्र योजना के क्षेत्र में मौलिक कदम उठाए।

प्रेमचंद ने घोषित रूप से स्वीकार किया कि उनके उपन्यासों का उद्देश्य चरित्रों पर प्रकाश डालना है। इस संबंध में उनके कुछ महत्वपूर्ण कथन इस प्रकार है:–

"मैं उपन्यास को मानव चरित्र का चित्र मात्र समझता हूँ।" एवं "मानव चरित्र पर प्रकाश डालना और उसके रहस्यों को खोलना ही उपन्यास का मूल तत्व है। × × × चरित्र संबंधी समानता और विभिन्नता, अभिन्नत्व में भिन्नत्व और विभिन्नत्व में अभिन्नत्व दिखाना उपन्यास का मुख्य कर्त्तव्य है।"

प्रेमचंद की चरित्र योजना को समझने के लिए यह जानना जरूरी है कि उन्होंने गांधी व मार्क्स के सिद्धांतों को सूक्ष्म समन्वय किया है। रामस्वरूप चतुर्वेदी के शब्दों में कहें तो "गांधी और मार्क्स को प्रेमचंद ने फेंटकर मिलाया है।" गांधी आदर्शवादी चिंतक है, इसलिए उनका ह्रदय परिवर्तन में गहरा विश्वास है। उनका दावा है कि बुरे से बुरा व्यक्ति भी उदात्त प्रेरणाओं के संपर्क में अच्छा बन सकता है। दूसरी ओर, मार्क्स का चिंतन भौतिकवादी है। उनका दावा है कि व्यक्ति की चेतना व उसका व्यक्तित्व कोई स्वायत्त वस्तु नहीं बल्कि भौतिक स्थितियों का 'बाई–प्रोडक्ट' है। आरंभ में प्रेमचंद गांधी से ज्यादा प्रभावित थे किन्तु गोदान तक आते–आते वे मार्क्स व गांधी के मध्य सहमति बिन्दु की तलाश कर रहे हैं। इसलिए वे किसी भी चरित्र को इस प्रकार दिखाते हैं कि वह अपनी सामाजिक, आर्थिक स्थितियों का 'बाई–प्रोडक्ट' भी नज़र आता है तो दूसरी ओर बीच–बीच में प्रेमचंद का अनूठा व्यक्तित्व भी झलक जाता है।

प्रेमचंद के चरित्र सामान्यतः वर्गगत हैं क्योंकि वे मानते हैं कि एक वर्ग के व्यक्ति सामान्यतः एक जैसे होते हैं। उदाहरण के लिए :–

"किसान पक्का स्वार्थी होता है इसमें संदेह नहीं। × × × × जब तक पक्का विश्वास न हो जाए, वह किसी के फुसलाने में नहीं आता।"[1]

"हर सरल गृहस्थ की भाँति होरी के मन में भी गऊ की लालसा चिरकाल से संचित चली आ रही थी।"[2]

जहाँ तक चरित्रों की संख्या का प्रश्न है, प्रेमचंद ने उनकी भीड़ नहीं लगाई है। कथानक के आकार की दृष्टि से चरित्रों की संख्या ठीक है। कहीं–कहीं कुछ चरित्र अनावश्यक प्रतीत होते हैं, जैसे मीनाक्षी देवी, रायसाहब का पुत्र इत्यादि। ऐसे ही, गोबर जब शहर जाता है तो रास्ते में एक पति–पत्नी को झगड़ा करने से रोकता है और उनका अतिथि बनता है। ये पात्र भी संरचना की दृष्टि से कथा का हिस्सा नहीं बन पाते हैं।

चरित्रों का आनुपातिक महत्व ठीक है। प्रमुख चरित्रों को ज्यादा स्थान दिया है और गौण चरित्रों को कम। इससे चरित्रों से तादात्म्य स्थापित करने में पाठक को समस्या नहीं होती। होरी, धनिया और गोबर 'सहभागी चरित्रों' में प्रमुख हैं, मातादीन, सिलिया, रायसाहब, मालती, खुर्शेद आदि को साधारण महत्व मिला है जबकि दमड़ी बँसोर, रामसेवक आदि 'प्रेक्षक चरित्र' है जो एकाध स्थान पर ही आए हैं।

चरित्र केवल अच्छे या केवल बुरे नहीं हैं बल्कि 'अच्छे और बुरे' हैं। सभी मुख्य चरित्र संश्लिष्ट हैं जिनमें अच्छाई व बुराई दोनों आनुपातिक रूप में हैं। होरी अच्छा ज़रूर है किन्तु भोला व दमड़ी बँसोर के प्रसंगों में उसकी कमजोरियाँ उभरती हैं। मथुरा सोना के प्रति एकनिष्ठ है किन्तु सिलिया के साथ एकान्त में संबंध बनाना चाहता है। ऐसी ही स्वाभविक कमजोरियाँ सभी प्रमुख चरित्रों में हैं।

प्रेमचंद की विशिष्टता उनकी चरित्र–चित्रण शैली में भी दिखती है। वे सबसे पहले किसी पात्र को बाह्य विशेषताओं का वर्णन करते हैं। यह वर्णन अत्यंत कम शब्दों में किंतु इतना सघन व बिम्बात्मक होता है कि एक ही वाक्य में पात्र की छवि पाठक के मन में मूर्त हो जाती है। उदाहरण के लिए:–

RRIJM 2015, All Rights Reserved

"होरी गहरे साँवले, पिचके हुए चेहरे।"[3]

"नोखेराम नाटे, मोटे, खल्वाट, लंबी नाक और छोटी–छोटी आँखों वाले सांवले आदमी थे।"

"सोना उम्र में किशोरी, देह के गठन में युवती और बुद्धि से बालिका थी, जैसे उसका यौवन उसे आगे खींचता था, बालपन पीछे।"[4]

बह्य व्यक्तित्व को दिखाने के बाद प्रेमचंद यह भी दिखाते हैं कि बाह्य व्यक्तित्व किन परिस्थितियों से निर्धारित हुआ है। इस तरीके से वे परिस्थिति व व्यक्तित्व के कारण–कार्य संबंध स्थपित करते हैं। उदाहरण के लिए वे धनिया के संबंध में लिखते हैं– "उसकी ही उम्र अभी क्या थी? छतीसवाँ ही साल तो था; पर सारे बाल पक गए थे, चेहरे पर झुर्रियाँ पड़ गयी थीं। सारी देह ढल गई थी, वह सुन्दर गेहुआँ रंग सँवला गया था और आँखों से भी कम सूझने लगा था। पेट की चिंता ही के कारण तो।"[5]

प्रेमचंद भली–भाँति समझते हैं कि आंतरिक व्यक्तित्व व प्रक्षेपित व्यक्तित्व पर ही नहीं रूक जाते, उस फाँक को भी दिखाते हैं जो उसके भीतरी और बाहरी व्यक्तित्व में विद्यमान है। उदाहरण के लिए :– "मालती बाहर से तितली है, भीतर से मधुमक्खी।" "रायसाहब राष्ट्रवादी होने पर भी हुक्काम से मेल–जोल बनाए रखते थे।"[6]

प्रेमचंद चरित्रों के अंतर्द्वन्द्व का भी सूक्ष्म वर्णन करते है। वे जानते हैं कि कोई भी सहज या मानवीय चरित्र मन, वचन व कर्म में अद्वैत नहीं रख सकता। जीवन की प्रकृति ही ऐसी है कि अंतर्विरोध पैदा होते हैं। और मन के भीतर अन्तर्द्वन्द्व को जन्म देते हैं। होरी बेहद सरल चरित्र है किन्तु होरी के भीतर भी दो बार अन्तर्द्वन्द्व दिखाया गया हैः– "यही भाव होरी के मन में भी आ रहे थे; लेकिन लड़के के इस विद्रोह भााव को दबाना जरूरी था। बोला × × × × भगवान ने जब गुलाम बना ही दिया है तो अपना क्या बस है?"[7] प्रेमचंद ने चरित्रों के वर्णन में प्रमाणिकता लाने के लिए मनोविज्ञान का सुन्दर प्रयोग किया है। वैयक्तिक और सामूहिक– दोनों मनोविज्ञानों का प्रयोग करने में वे सिद्धहस्त हैं :– "वह विधवा है। उसके नारीत्व के द्वार पर पहले उसका पति रक्षक बना बैठा रहता था। वह निश्चिन्त थी। अब उस द्वार पर कोई रक्षक न था, इसलिए वह उस द्वार को सदैव बंद रखती है। कभी–कभी घर के सूनेपर से भरकर वह द्वार खोलती है; पर किसी को आते देखकर भयभीत होकर दोनों पट भेड़ लेती है।"[8]

इन सब के बावजूद प्रेमचंद के चरित्र योजना की कुछ सीमाएँ भी उभरकर सामने नजर आता है। गोदान में कुछ चरित्र सिर्फ आदर्शो के प्रेक्षपण के माध्यम होकर रह गए हैं, जैसेः– गोविन्दी, मालती। शहरी चरित्रों का व्यक्तित्व जिन परिस्थितियों में उभारा गया है, वे प्रायः कृत्रिम है; इसलिए चरित्र प्रभावशाली नहीं बन सके हैं। जैसे :–धनुष यज्ञ व कबड्डी जैसे प्रसंग कथानक पर थोपे हुए प्रतीत होते हैं। कई चरित्रों पर अंत में प्रेमचंद का आदर्शवाद हावी हो गया है जिसके कारण उनका हृदय परिवर्तन होते हुए दिखाया गया है, जैसे :– हीरा, गोबर, खन्ना, मालती। इसके यथार्थ का तत्व कुछ कम हो गया है और चरित्रों का प्रभाव क्षमता पर नकारात्मक असर पड़ा है।

अंततः कहा जा सकता है कि प्रेमचंद ने बहुत ही संजीदगी से गोदान के चरित्रों को सजाया है। गोदान में प्रेमचंद अपने विचारधारा आदर्शोन्मुख यथर्थवाद का अतिक्रमण करके यथार्थवाद पर पहुँचा देते हैं– होरी की मौत।

संदर्भ :–

1.गोदान/प्रेमचंद/मलिक एंड कं.–संस्करण–2010/पृष्ठ–9
2.गोदान/प्रेमचंद/मलिक एंड कं.–संस्करण–2010/पृष्ठ–6
3.गोदान/प्रेमचंद/मलिक एंड कं.–संस्करण–2010/पृष्ठ–5
4.गोदान/प्रेमचंद/मलिक एंड कं.–संस्करण–2010/पृष्ठ–15
5.गोदान/प्रेमचंद/मलिक एंड कं.–संस्करण–2010/पृष्ठ–5
6.गोदान/प्रेमचंद/मलिक एंड कं.–संस्करण–2010/पृष्ठ–11
7.गोदान/प्रेमचंद/मलिक एंड कं.–संस्करण–2010/पृष्ठ–15
8.गोदान/प्रेमचंद/मलिक एंड कं.–संस्करण–2010/पृष्ठ–23

RRIJM 2015, All Rights Reserved